आधुनिक हिन्दी गीति–काव्य में नरेन्द्र शर्मा के गीति–काव्य का स्थान

डॉ0 सुधा रानी*

सह आचार्य, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, वैश्य महाविद्यालय, भिवानी, हरियाणा, भारत

***Email ID**: drsudhachauhan1818@gmail.com*

Accepted: 06.09.2022 **Published**: 01.10.2022

मुख्य शब्दः गीति–काव्य, गीतकार, भक्ति, राष्ट्रीय भावन, छायावादी युग।

शोध आलेख सार

आधुनिक युग में हिन्दी कवियों ने गीति–काव्य की परम्परा को जीवित ही नहीं रखा, वरन् उसे आगे भी बढ़ाया। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र इस युग के प्रथम गीतकार हैं, उन्होंने राधा–कृष्ण की भक्ति के साथ–साथ देश की दुर्दशा–ग्रस्त दीन दशा के शोकातुर गीत गाए। 'भारत दुर्दशा' तथा 'नील देवी' के गीत राष्ट्रीय भावना से परिपूर्ण हैं। उनके गीतों में गीतिकाव्य के अनेक गुण पाये जाते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में आधुनिक हिन्दी गीति–काव्य में नरेन्द्र शर्मा के गीति–काव्य का स्थान की विवेचना प्रस्तुत हैं।

पहचान निशान

**Corresponding Author*

भूमिकाः– वस्तुतः द्विवेदी युग के प्रमुख गीतकारों में मैथिलीशरण गुप्त का नाम प्रसिद्ध है। गुप्त जी के गीतों में देश की दयनीय दशा से उत्पन्न करूणा के साथ राष्ट्रीय भावना का प्राबल्य है। 'साकेत' तथा 'यशोधरा' में सफल गीतों की रचना हुई है। 'साकेत' का नवम सर्ग तो गीत बाहुल्य के कारण प्रसिद्ध है। गुप्त जी ने गीत तो लिखे परन्तु उनमें शब्दों के अन्तराल से फूट पड़ने वाली संगीतात्मकता नहीं है। गुप्त जी की प्रतिभा गीतिकाव्यात्मक नहीं, प्रबन्धात्मक है।

छायावादी युग गीतिकाव्य का चरमोत्कर्ष काल है। यहाँ गीतिकाव्य को भाव–सौन्दर्य, कला वैभव की नवल उर्वराभूमि प्राप्त हुई। प्रसाद, निराला, पन्त, माखनलाल चतुर्वेदी, महादेवी वर्मा, रामकुमार वर्मा आदि इसी युग के गीतकार हैं। इनमें नूतन कल्पनाशीलता और सूक्ष्म अभिव्यंजना अत्यन्त मार्मिक है। प्रसाद जी के गीत, गीत–तत्त्व और काव्य–तत्त्व की दृष्टि से उल्लेखनीय हैं। उनके गीतों में दार्शनिकता, प्रकृति में मानवीय भावों का आरोप, आत्मा की तीव्रता, सघनता और

व्यापकता अधिक मात्रा में पाई जाती है। निराला के गीत करुण एवं नवजागरण के संदेश से परिपूर्ण है और उनमें भाषा की विविधता है। माखनलाल चतुर्वेदी के गीतों में देशोद्धार और राष्ट्रीय प्रेम की भावनाएँ निहित हैं। पंत जी में प्रगीतात्मक सामर्थ्य अदभुत है। उन्होंनें खड़ी बोली को गीत की भाषा दी, चाहे वह अभिजात्य से बोझिल और किसी सीमा तक कृत्रिम हो। पंत जी के प्रारम्भिक गीत, जहाँ वे दर्शन से आक्रांत नहीं है, उनके परवर्ती गीतों की अपेक्षा गीतिकाव्य के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। महादेवी के गीत आत्मविस्मृति, भाव–विदग्धता ओर संगीत की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ हैं, जिनमें विरह की सघनता, तीव्रता अजस्र रूप में विद्यमान है।

डॉ0 रामकुमार वर्मा के गीतों में अनुभूति की गहनता है जो लौकिक की अपेक्षा लोकोत्तर अधिक है। छायावादी युग के गीत जहाँ अनेक गुणों से सम्पन्न हैं, वहाँ उनमें अनेक दोष भी हैं। इन गीतों में दार्शनिकता का प्रवेश, बौद्धिकता की दुरूहता तथा अभिजात्य से युक्त भाषा की कृत्रिमता के कारण पाठक स्वच्छन्दतापूर्वक रसानुभूति का आनन्द प्राप्त नहीं कर पाता। इनमें वैयक्तिकता और रागात्मकता के दर्शन भी होते हैं परन्तु वह प्रकृति बाला की गोद में इस प्रकार छिपी हुई है कि उसे पहचानना असंभव नहीं तो कठिन अवष्य है। इनमें धरती पर निवास करने वाले 'होरी' की बातें नहीं, वरन अलौकिक जगत की बातें हैं। इनकी भाषा मधुर है परन्तु वह शिक्षित वर्ग तथा अभिजात वर्ग की कृत्रिम भाषा के अधिक निकट है। उसका सौन्दर्य तितली जैसा है, माधुर्य अमृत के समान है, जिसे प्राप्त करना असंभव है। इन सभी कारणों से छायावादी युग का गीतिकाव्य जनमानस की भावनाओं को उद्वेलित न कर सका।

छायावादोत्तर काल में नरेन्द्र शर्मा के अतिरिक्त डॉ0 हरिवंश राय बच्चन, रामेश्वर शुक्ल अंचल, भगवतीचरण वर्मा, शिव मंगल सिंह सुमन, गिरिजाकुमार माथुर, बालकृष्ण शर्मा नवीन, दिनकर, हरिकृष्ण प्रेमी आदि उल्लेखनीय हैं। इन कवियों ने छायावादी गीतिकाव्य की वायवीयता, आध्यात्मिकता, आवरणप्रियता, के प्रति विद्रोह किया। इन गीतकारों ने अपने गीतों की अभिव्यक्ति को सरल और सीधी बनाया। यह छायावादी लाक्षणिक अभिव्यक्ति का ही दिशांतरण है। प्रच्छन्न का स्थान प्रत्यक्ष ने और सूक्ष्म का स्थान स्थूल ने ग्रहण किया। प्रेम तत्त्व वास्तव में स्वच्छ हुआ। इन्होंने प्रेम की स्थूलता को अपने गीतों का विषय बनाया जिसमें ये कवि चुम्बन और आलिंगन का प्रत्यक्ष वर्णन करने में भी नहीं चूके। इस सम्बन्ध में इन्होंने सामाजिक मान्यताओं की परवाह भी नहीं की। इनके गीतों को इस समय के युवक और युवतियों ने खूब अपनाया, जिनसे इनकी लोकप्रियता बढ़ी।

छायावादोत्तर काल में नरेन्द्र शर्मा एक प्रतिभाशाली गीतकार का व्यक्तित्व लेकर हिन्दी जगत में आये, जिनकी लोकप्रियता छायावादी युग में ही फैल चुकी थी। उनके गीतों की मार्मिक ध्वनि जब हृदय की करूणतम भावनाओं को साकार कर मूर्च्छना भरे संगीत के रूप में निनादित होती, तो युवाओं की हृदयतंत्री झंकृत हो उठती थी।

नरेन्द्र शर्मा के गीति काव्य में अनेक ऐसी सामान्य विशेषताएँ हैं, जो अन्य छायावादोत्तर हिन्दी गीतकारों के गीतिकाव्य में भी मिलती हैं। नरेन्द्र जी के कृत्तित्व में कुछ मौलिक विशेषताएँ भी हैं,

जिनके आधार पर छायावादोत्तर गीतिकाव्य में उनके स्थान की चर्चा की जा सकती है। पहली विशिष्टता यह है कि उनके गीतिकाव्य में भावना के उत्कर्ष के साथ स्वतंत्र मौलिक चिन्तन का प्राधान्य है, जिसके परिणाम स्वरूप उसमें कवि हृदय के स्पन्दनों की मधुर झंकृति के साथ सामाजिक दुःख दर्द के प्रति सच्ची संवेदनशीलता भी आ गई है। यह विशिष्टता किसी सीमा तक भगवतीचरण वर्मा और शिव मंगल सिंह सुमन के गीतिकाव्य में भी मिलती है, किन्तु बच्चन और अंचल के अधिकांश गीतों में व्यक्तिमन की निविड़ताओं में ही झांकने का प्रयास हुआ है। उनके बलवती मानवीय स्वर के बावजूद उनमें किसी स्पष्ट सामाजिक चिन्तन तथा राजनीतिक बोध का गुंजन नहीं मिलता। नवीन जी अपने बलिदानी एवं राष्ट्रीय तेवर के बावजूद मुख्यतः एक रोमानी कवि हैं। हरिकृष्ण प्रेमी सीधे सच्चे रोमानी कवि हैं। उनमें नरेन्द्र शर्मा की सी चिन्तनशीलता एवं सामाजिकता का आग्रह नहीं। दिनकर जी सफल गीतों के रचयिता होने के बावजूद ओजस्वी वर्णनात्मक एवं कथात्मक रचनाओं में अपने कवित्व के उत्कर्ष पर हैं। मूलतः उनकी प्रतिभा प्रबन्धात्मक है, गीतिकाव्यात्मक नहीं। अतः वे 'कुरूक्षेत्र' एवं 'उर्वशी' में अपने चरमोत्कर्ष पर हैं, पर इन दोनों रचनाओं में कथा का आंचल पकड़ा गया है, कभी ढीलें हाथों कभी कसकर।

नरेन्द्र जी के गीतिकाव्य में यथार्थ का आग्रह है, पर वह अन्य गीतकारों के काव्य में भी है। यथार्थवादी चेतना के भी अनेक स्तर हैं। कुछ कवि ऐसे हैं जो यथार्थ को पकड़ने का प्रयत्न करते हुए भी मुख्यतया रोमानी कवि हैं। अंचल, बच्चन, नवीन, हरिकृष्ण प्रेमी आदि ऐसे ही कवि हैं। नरेन्द्र जी छायावादी रोमानी प्रवृत्ति से मुक्त होकर यथार्थवाद की ठोस जमीन पर खड़े दिखाई देते हैं। 'लाल निशान', 'अग्निशस्य,आदि संग्रहों की रचनाएँ इस बात के प्रमाण हैं, जिनमें उनकी चेतना में मार्क्स के द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी दर्शन के आलोक में विकसित होती है। यहाँ वे यथार्थ को वैज्ञानिक दृष्टि से ग्रहण करते हैं। उनकी यह विशिष्टता उन्हें अनेक समकालीन हिन्दी कवियों से अलग कर देती है। यह बात दूसरी है कि परवर्ती रचनाओं में उनका यथार्थ के प्रति आग्रह आदर्शवाद में बदल जाता है, और उनकी परिणति एक आध्यात्मिक रहस्यवादी कवि के रूप में हो जाती है। उनकी काव्य यात्रा का एक ऐसा दौर रहा है जबकि नरेन्द्र जी अपने गीतों में वैज्ञानिक यथार्थवादी स्वर भी अंकित करके छायावादोत्तर हिन्दी गीतकारों में एक विशिष्ट स्थान के अधिकारी बन गए हैं।

नरेन्द्र शर्मा के गीतिकाव्य की एक विशिष्टता भाषा के अभिजात्य से मुक्ति है। छायावादी कवियों ने गीत–विधा को उसके उत्कर्ष पर पहुँचाया, ओर खड़ी बोली को गीत के अनुकूल बनाया, पर उनकी भाषा प्रायः संस्कृत निष्ठ है, जो सुशिक्षित एवं अभिजात वर्ग के पाठकों के लिए सहज हो सकती है। कुल मिलाकर उनकी भाषा अभिजात्य पूर्ण कृत्रिम है। निराला के प्रवृत्ति काव्य की भाषा इसका अपवाद है। नरेन्द्र शर्मा ने सहज, सरल, अकृत्रिम भाषा में गीतों की रचना करके भाषा के इस अभिजात्य से हिन्दी गीति–काव्य को मुक्ति दिलाने का प्रयास किया । इस सम्बन्ध में बच्चन जी का योगदान भी बहुत महत्वपूर्ण है। अंचल, गिरिजाकुमार माथुर, उदयशंकर भट्ट, आदि

भाषा के अभिजात्य का मोह न छोड़ सके। इस दिशा में नरेन्द्र शर्मा और बच्चन आधुनिक गीतकारों में सबसे अलग दिखाई देते हैं। आगे चलकर नागार्जुन, बलवीर सिंह रंग, गोपाल सिंह नेपाली, ओर नीरज आदि कवियों ने भी इस मार्ग का अनुसरण किया।

सारांशः—निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि नरेन्द्र शर्मा के गीतिकाव्य में अनुभूति की तरलता है तो स्वतंत्र मौलिक चिन्तन की गरिमा भी है। उसमें लाक्षणिक प्रतीकात्मक तथा नाद सौन्दर्य युक्त कोमल कान्त पदावली का प्रयोग हुआ है, तो उसमें छन्दों की विविधता ओर संगीतात्मकता भरपूर है। उसमें कहीं प्रेमी हृदय की उद्‌गम भावनाएँ है तो कहीं सामाजिक एवं आर्थिक भेद—भाव से पीड़ित कृषकों, मजदूरों एवं अबलाओं की आर्तवाणी मुखरित हुई है। वहीं अन्तर्राष्ट्रीय भाई चारा व्यक्त हुआ है, तो कहीं भ्रष्टाचारी, अनाचारी, मुनाफाखोरी, पूंजीपतियों के प्रति रोष भरे उद्‌गार हैं। कहीं विराट सत्ता का सांकेतिक निरूपण है, तो कहीं प्रकृति सुंदरी की सचेतन झांकियां चित्रित हुई हैं। कहीं मानवीय कोमल भावनाओं की मधुर व्यंजना है, तो कहीं विरह वेदना ओर पीड़ा की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। सहजता, सरलता, यथार्थता, आदि इनके गीतिकाव्य के प्रमुख गुण हैं। उसमें अनुभूति की विविधता, गहनता, सजीवता, भाव वैविध्य, कल्पना की सजलता, राग, तत्व की प्रबलता आदि दर्शनीय है। उनकी गीतिकाव्य की अभिव्यक्ति में सुष्ठुता, सरसता, प्राजंलता, भाव, प्रेषणीयता, भाषा की चित्रात्मकता, गेयता एवं रचना चातुर्य से ओत—प्रोत है। इन समस्त विशेषताओं के आधार पर कहा जा सकता है कि आधुनिक गीतिकाव्य में नरेन्द्र शर्मा के गीति काव्य का विशिष्ट स्थान है।

संदर्भ—ग्रंथ सूचीः—

1. प्रवासी के गीत, नरेन्द्र शर्मा, पृ. 85
2. छायावाद—युग, शम्भूनाथ सिंह, पृ. 350
3. हंस माला, नरेन्द्र शर्मा, पृ. 13
4. प्रभात—फेरी, नरेन्द्र शर्मा, पृ. 43, 'अवगुंठन', पृ. 38

   'आलिंगन' पृ. 82—83